

डैनियल की पुस्तक - संख्या चौंसठ

भविष्यवाणी का अनावरण: 11 सितंबर, 2001 का मुहरबंदी के समय, उत्तरवृष्टि और मसीह के अंतिम कार्य से संबंध

Jeff Pippenger

2024-01-28

हाल के लेखों में हम भविष्यवाणी की आत्मा के कुछ अंशों का उल्लेख कर रहे हैं, जो 11 सितंबर, 2001 से लेकर उस समय तक की अवधि को चिन्हित करते हैं जब माइकल उठ खड़ा होगा और मानव जाति का परीक्षाकाल समाप्त हो जाएगा। उस अवधि के दौरान, कुछ भविष्यसूचक चित्रण हैं जो परम पवित्र स्थान में मसीह के अंतिम कार्य को चिन्हित करते हैं।

पवित्रस्थान में मसीह का कार्य दानियेल के आठवें अध्याय के उलाई नदी के दर्शन में दर्शाया गया है, और सिस्टर वाइट ने हमें बताया है कि उलाई नदी का वह दर्शन अब पूरा होने की प्रक्रिया में है। स्वर्गीय पवित्रस्थान में संपन्न होने वाला अंतिम कार्य, जो अब पूरा होने की प्रक्रिया में है, विभिन्न भविष्यवाणी-संबंधी शब्दों में व्यक्त किया गया है। अन्य भविष्यवाणीगत चित्रणों के साथ, इसे मुहरबंदी का समय, अंतिम वर्षा, उद्धार के समापन का कार्य, और मंदिर की शुद्धि के रूप में प्रस्तुत किया गया है। उन शब्दों को एक साथ लाना, और उन्हें उनके सही ऐतिहासिक संदर्भ में रखना, महत्वपूर्ण है।

उस समय, जब उद्धार का कार्य समापन पर होगा, पृथ्वी पर क्लेश आएँगे, और राष्ट्र क्रोधित होंगे, फिर भी उन्हें इस प्रकार नियंत्रित रखा जाएगा कि तीसरे स्वर्गदूत के कार्य में बाधा न पड़े। उसी समय 'परवर्ती वर्षा', या प्रभु की उपस्थिति से मिलने वाली ताज़गी, आएगी, ताकि तीसरे स्वर्गदूत की ऊँची आवाज़ को शक्ति मिले, और संतों को तैयार किया जाए कि वे उस अवधि में दृढ़ बने रहें जब सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी। प्रारंभिक लेखन, 85.

"तीसरे स्वर्गदूत का कार्य" भी "उद्धार का कार्य" है, जो "संतों को उस काल में खड़े रहने के लिए जब सात अंतिम विपत्तियाँ उंडेली जाएँगी" तैयार करता है।

और राष्ट्र क्रोधित हो उठे, और तेरा क्रोध आ गया है, और मृतकों के न्याय का समय आ गया है, कि उनका न्याय किया जाए; और कि तू अपने दास भविष्यद्वक्ताओं को, पवित्र जनों को, और जो तेरे नाम से डरते हैं, छोटे-बड़े सबको प्रतिफल दे; और जो पृथ्वी का नाश करते हैं, उनका नाश करे। प्रकाशितवाक्य 11:18.

अनुग्रह का काल समाप्त होने से पहले राष्ट्र क्रोधित हो उठते हैं (जब परमेश्वर का क्रोध उंडेला जाता है); फिर भी, जब राष्ट्र क्रोधित होते हैं, तो उन्हें 'रोक कर रखा' भी जाता है। राष्ट्रों के क्रोधित होने का वह 'समय' उद्धार के समापन कार्य की शुरुआत का संकेत करता है, और उद्धार के समापन का कार्य परमेश्वर की प्रजा पर मुहर लगाना है।

परमेश्वर की सच्ची प्रजा, जिसके हृदय में प्रभु के कार्य की भावना और आत्माओं के उद्धार की चिन्ता होती है, पाप को सदैव उसके वास्तविक, पापपूर्ण स्वरूप में देखेगी। वह हमेशा उन पापों से निष्ठापूर्वक और स्पष्ट रीति से निपटने के पक्ष में रहेगी, जो सहज ही परमेश्वर की प्रजा को घेर लेते हैं। विशेषकर कलीसिया के लिए समापन के कार्य में, उस मुहरबंदी के समय में जब एक लाख चवालीस हजार परमेश्वर के सिंहासन के सामने निर्दोष खड़े होंगे, वह परमेश्वर के नामधारी लोगों की बुराइयों को सबसे गहराई से महसूस करेगी। यह बात भविष्यद्वक्ता के उस चित्रण द्वारा बलपूर्वक प्रकट की गई है, जिसमें अन्तिम कार्य को ऐसे पुरुषों की छवि से दिखाया गया है जिन-जिन के हाथ में वध का हथियार था। उनमें से एक मनुष्य सन का वस्त्र पहने हुए था, और उसकी कमर पर लेखक का दवात था। 'और प्रभु ने उससे कहा, नगर के बीच से, यरूशलेम के बीच से होकर निकल, और उन पुरुषों के मार्गों पर एक चिन्ह कर जो उसके बीच में किए जा रहे सब घृणित कामों के कारण आहें भरते और

विलाप करते हैं।' टेस्टिमोनीज़, खंड 3, 266.

राष्ट्रों पर अंकुश लगाया गया है ताकि एक लाख चवालीस हज़ार पर मुहर लगाए जाने में बाधा न पड़े। प्रकाशितवाक्य के सातवें अध्याय में, अंकुश में रखे गए क्रोधित राष्ट्रों को चार हवाओं के रूप में दर्शाया गया है, जिन्हें उसी समयावधि के दौरान रोके रखा जाता है, और उस समय को विशेष रूप से एक निश्चित अवधि के रूप में चिन्हित किया गया है।

शैतान अब मुहर लगने के इस समय में हर उपाय का उपयोग कर रहा है, ताकि परमेश्वर के लोगों के मनो को वर्तमान सत्य से दूर रखे और उन्हें डगमगाए। मैंने एक आवरण देखा जो परमेश्वर अपने लोगों पर संकट के समय उनकी रक्षा के लिए फैला रहे थे; और हर वह आत्मा जो सत्य पर दृढ़ थी और हृदय से शुद्ध थी, उसे सर्वशक्तिमान के उस आवरण से ढका जाना था।

शैतान यह जानता था, और वह प्रबल शक्ति के साथ इस काम में सक्रिय था कि जितने संभव हो उतने लोगों के मन सत्य के विषय में डांवाडोल और अस्थिर बने रहें। ...

मैंने देखा कि शैतान परमेश्वर के लोगों का ध्यान भटकाने, उन्हें छलने और उन्हें दूर खींच ले जाने के लिए इन तरीकों से काम कर रहा था, अभी इसी मुहरबंदी के समय। मैंने कुछ ऐसे लोगों को देखा जो वर्तमान सत्य के पक्ष में दृढ़ता से खड़े नहीं थे। उनके घुटने कांप रहे थे, और उनके पैर फिसल रहे थे, क्योंकि वे सत्य पर मजबूती से जमे नहीं थे, और जब वे इस प्रकार कांप रहे थे, तो सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आवरण उन पर नहीं डाला जा सकता था।

"शैतान उन्हें वहीं रोके रखने के लिए अपनी हर कला आजमा रहा था, जब तक कि मुहर लगाने का कार्य समाप्त न हो जाए, जब तक कि परमेश्वर की प्रजा पर आवरण न खींच दिया जाए, और वे अंतिम सात विपत्तियों में परमेश्वर के धधकते क्रोध से बचाने वाले किसी आश्रय के बिना रह जाएँ। परमेश्वर ने अपनी प्रजा पर यह आवरण खींचना आरंभ कर दिया है, और शीघ्र ही यह उन सब पर खींच दिया जाएगा जिन्हें वध के दिन आश्रय मिलना है। परमेश्वर अपनी प्रजा के लिए सामर्थ्य के साथ कार्य करेगा; और शैतान को भी कार्य करने की अनुमति दी जाएगी।" प्रारंभिक लेखन, 43, 44.

बहन वाइट ने ये शब्द 1851 में लिखे, पाँच वर्ष पहले, जब परमेश्वर के लोग लाओदीकिया की दशा में आ गए और "seven times" की बढ़ी हुई ज्योति को अस्वीकार करके मुहरबंदी की प्रक्रिया को विलम्बित कर दिया। वह ज्योति बढ़ती जाती और सात अन्तिम विपत्तियों से पहले ही अपने लोगों को आवरण देने के परमेश्वर के कार्य को पूरा कर देती। इसके विपरीत, परमेश्वर के लोगों ने विद्रोह किया और लाओदीकिया की मरुभूमि में भटकने के लिए ठहरा दिए गए, जैसा कि प्राचीन इस्राएल के विद्रोह और जंगल में भटकने से प्रतीकित था। प्राचीन इस्राएल के विद्रोहियों में से कितने प्रतिज्ञात देश में प्रवेश किए? बाइबल में या भविष्यद्वाणी की आत्मा में ऐसा कौन-सा अंश है जो बताता हो कि लाओदीकिया के कोई लोग उद्धार पाएँगे? उत्तर है, "कोई नहीं!" क्योंकि लाओदीकिया का व्यक्ति उतना ही खोया हुआ है जितने प्राचीन इस्राएल के वे लोग जो जंगल में मर गए।

एक लाख चवालीस हज़ार की मुहरबंदी समय की एक अवधि है, और यह तब शुरू होती है जब चार स्वर्गदूत चार पवनों को रोकते हैं, जो वही समय है जब राष्ट्र क्रोधित होते हैं, फिर भी अंकुश में रखे जाते हैं। मुहरबंदी के समय परमेश्वर अपने लोगों को सात अंतिम विपत्तियों के समय दृढ़ खड़े रहने के लिए तैयार करता है, और उस तैयारी को उसके लोगों पर 'एक आवरण' फैला देने के रूप में दर्शाया गया है, तथा इसे उद्धार के कार्य की समाप्ति और तीसरे स्वर्गदूत के कार्य की समाप्ति के रूप में भी प्रस्तुत किया गया है। इन सभी चित्रणों द्वारा दर्शाई गई यह तैयारी 'वर्तमान सत्य' को स्वीकार करने पर आधारित है।

जो लोग 'वर्तमान सत्य के लिए दृढ़ता से' खड़े नहीं होंगे, वे वही हैं जो 'डगमगा रहे थे', क्योंकि उनका मन 'वर्तमान सत्य' पर केंद्रित नहीं था। वह लिखती हैं कि उसने 'कुछ लोगों को देखा जो वर्तमान सत्य के लिए दृढ़ता से नहीं खड़े थे। उनके घुटने कांप रहे थे, और उनके पैर फिसल रहे थे, क्योंकि वे सत्य पर दृढ़ता से जमे नहीं थे, और जब वे इस

प्रकार कांप रहे थे, तब सर्वशक्तिमान परमेश्वर का आवरण उनके ऊपर नहीं खींचा जा सकता था।'

"वर्तमान सत्य" वही है जो "आवरण" प्रदान करता है, और "आवरण" को "परमेश्वर की मुहर" के रूप में भी दर्शाया गया है। "परमेश्वर की मुहर" का प्रतीक उस रक्त से किया गया था जिसने इब्रानियों के द्वारों को ढक दिया था, जिससे विनाशक स्वर्गदूत उन घरों को पार कर जाता था जहाँ द्वार रक्त से "ढका" हुआ था। "आवरण" ही "मुहरबंदी" है, और "मुहरबंदी" "वर्तमान सत्य" के द्वारा संपन्न होती है।

उन्हें अपने सत्य के द्वारा पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है। यूहन्ना 17:17.

प्रत्येक सुधार आंदोलन का अपना एक विशिष्ट विषय था, और एक लाख चवालीस हजार के सुधारवादी आंदोलन का विषय "तीसरी विपत्ति का इस्लाम" है। अंतिम दिनों में "वर्तमान सत्य" "तीसरी विपत्ति का इस्लाम" है।

"शास्त्र परमेश्वर के लोगों के लिए निरंतर खुलते रहते हैं। हर पीढ़ी के लिए विशेष रूप से लागू होने वाला एक सत्य सदा रहा है और सदा रहेगा।" Review and Herald, 29 जून, 1886.

यह वर्तमान सत्य का "संदेश" है जो अंतिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा को मुहरबंद करता है, और मुहरबंदी का समय तब शुरू होता हुआ दर्शाया गया है जब चारों पवनों को रोके रखा जाता है। राष्ट्र 11 सितंबर, 2001 को क्रोधित हुए, और उसी समय एक लाख चवालीस हजार की मुहरबंदी शुरू हुई, क्योंकि "अंतिम वर्षा", जो "एक संदेश" है, की मुहर खुलनी शुरू हुई।

योहन के सामने कलीसिया के अनुभव के गहन और रोमांचकारी दृश्य खोले गए। उसने परमेश्वर की प्रजा की स्थिति, उनके खतरों, संघर्षों और अंतिम मुक्ति को देखा। वह उन अंतिम संदेशों को लिखता है जो पृथ्वी की फसल को पकाने के लिए हैं—या तो स्वर्गीय कोठार के लिए गठुओं के रूप में, या विनाश की आग के लिए ईंधन-लकड़ियों के रूप में। अत्यंत महत्वपूर्ण विषय उसे प्रकट किए गए, विशेषकर अंतिम कलीसिया के लिए, ताकि जो लोग भ्रांति से सत्य की ओर मुड़े, उन्हें उनके सामने उपस्थित संकटों और संघर्षों के विषय में निर्देश दिया जा सके। पृथ्वी पर क्या आने वाला है, इस विषय में किसी को भी अंधकार में रहने की आवश्यकता नहीं है। महान विवाद, 341.

जब जातियाँ क्रोधित हुईं, तो उन्हें एक ही समय पर काबू में रखा गया, और "अंतिम वर्षा" गिरने लगी, और यह "अंतिम वर्षा" "वर्तमान सत्य" का वह संदेश है जो परमेश्वर की प्रजा पर मुहर लगाता है।

"बैटल क्रीक में काम भी इसी ढंग का है। आरोग्यशाला के नेताओं ने अविश्वासियों के साथ घुलमिल कर, उन्हें कमोबेश अपनी परिषदों में स्थान दिया है, पर यह आंखें मूंदकर काम करने जैसा है। उनमें यह विवेक नहीं है कि वे देख सकें कि किसी भी समय हमारे ऊपर क्या टूट पड़ने वाला है। हताशा, युद्ध और रक्तपात की एक भावना है, और वह भावना समय के बिलकुल अंत तक बढ़ती जाएगी। ज्यों ही परमेश्वर के लोगों के ललाटों पर मुहर कर दी जाएगी - यह कोई दिखाई देने वाली मुहर या चिह्न नहीं है, बल्कि सत्य में ऐसा स्थिर हो जाना है, बौद्धिक और आत्मिक, दोनों रूपों में, कि उन्हें डोलाया न जा सके - ज्यों ही परमेश्वर के लोग मुहरबंद होकर हिलावट के लिए तैयार हो जाएंगे, वह आ जाएगी। वास्तव में, यह पहले ही शुरू हो चुका है। परमेश्वर के न्याय अब भूमि पर हैं, हमें चेतावनी देने के लिए, ताकि हम जान सकें कि क्या आने वाला है।" मैन्युस्क्रिप्ट रिलीज़ेज़, खंड 10, 252.

"सीलिंग" "सत्य में स्थिर हो जाना" है। सीलिंग के समय के संदर्भ में वह लिखती हैं, "हताशा, युद्ध और रक्तपात की एक आत्मा है, और वह आत्मा समय के बिलकुल अंत तक बढ़ती जाएगी।" जब राष्ट्र क्रोधित होंगे, तो उन्हें रोके रखा जाएगा, परंतु "चार पवनों" के रूप में दर्शाए गए "युद्ध और रक्तपात" "समय के बिलकुल अंत तक बढ़ते जाएंगे।" तीसरे "Woe" का इस्लाम अपना युद्ध क्रमिक रूप से समय के बिलकुल अंत तक बढ़ाता जाता है, और एक लाख चवालीस हजार के सुधार में "विषय" के रूप में इस्लाम की भविष्यसूचक समझ भी उसी अवधि के दौरान साथ-साथ बढ़ती जाती है। इस्लाम द्वारा संपन्न यह क्रमिक तीव्रता उसी समयवाधि में अंतिम वर्षा के उण्डेले जाने के समानांतर चलती है, क्योंकि अंतिम वर्षा एक "संदेश" है।

“सम्पूर्ण पृथ्वी के प्रभु के पास खड़े हुए अभिषिक्त जनों को वह स्थान प्राप्त है जो कभी शैतान को आच्छादक करूब के रूप में दिया गया था। उसके सिंहासन को घेरे हुए पवित्र प्राणियों के द्वारा प्रभु पृथ्वी के निवासियों के साथ निरंतर संचार बनाए रखता है। स्वर्णमय तेल उस अनुग्रह का प्रतीक है जिसके द्वारा परमेश्वर विश्वासियों के दीपकों को भरा हुआ रखता है, ताकि वे टिमटिमाएँ नहीं और बुझ न जाएँ। यदि यह पवित्र तेल परमेश्वर की आत्मा के संदेशों में स्वर्ग से उंडेला न जाता, तो दुष्टता की शक्तियों का मनुष्यों पर पूर्ण नियंत्रण हो जाता।”

“जब हम उन संदेशों को ग्रहण नहीं करते जो परमेश्वर हमें भेजता है, तब परमेश्वर का अनादर होता है। इस प्रकार हम उस स्वर्णिम तेल को अस्वीकार करते हैं, जिसे वह हमारी आत्माओं में उंडेलना चाहता है, ताकि वह अंधकार में रहने वालों तक पहुँचाया जाए। जब यह पुकार सुनाई देगी, ‘देखो, दूल्हा आता है; उससे भेंट करने के लिए निकलो,’ तब जिन्होंने पवित्र तेल को ग्रहण नहीं किया है, जिन्होंने अपने हृदयों में मसीह के अनुग्रह को संजोकर नहीं रखा है, वे मूर्ख कुँवारियों के समान पाएँगे कि वे अपने प्रभु से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं। अपने आप में उनमें तेल प्राप्त कर सकने की शक्ति नहीं है, और उनका जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है। परन्तु यदि परमेश्वर की पवित्र आत्मा की याचना की जाए, यदि हम मूसा के समान विनती करें, ‘मुझे अपनी महिमा दिखा,’ तो परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उंडेल दिया जाएगा। स्वर्णिम नलियों के द्वारा वह स्वर्णिम तेल हमें पहुँचाया जाएगा। ‘न सामर्थ्य से, न शक्ति से, परन्तु मेरे आत्मा के द्वारा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।’ धर्म के सूर्य की उज्ज्वल किरणों को ग्रहण करके, परमेश्वर की संतानें जगत में ज्योतियों के समान चमकती हैं।” Review and Herald, July 20, 1897.

अंतिम वर्षा की शुरुआत "छिड़काव" से होती है और अंततः वह पूरी तरह बरसा दी जाती है। अंतिम वर्षा का यह "छिड़काव" इस बात का संकेत है कि वर्षा "मापकर" बरसाई जा रही है, और पूर्ण उंडेलना तब होता है जब वह "बिना माप" बरसाई जाती है। सिस्टर व्हाइट स्पष्ट रूप से एक ऐसे समय की पहचान करती हैं जब अंतिम वर्षा पड़ रही होती है, और कुछ उसे ग्रहण करते हैं, जबकि कुछ नहीं। उस समय वर्षा "मापकर" बरसाई जा रही होती है, या वह "छिड़काव" है।

कुछ लोग समझ जाएंगे कि कुछ हो रहा है, लेकिन उससे वे केवल डर जाएंगे।

"कलीसियाओं में परमेश्वर की सामर्थ का एक अद्भुत प्रगटीकरण होने वाला है, परन्तु वह उन पर प्रभाव नहीं डालेगा जिन्होंने प्रभु के सामने स्वयं को दीन नहीं किया है, और स्वीकारोक्ति और पश्चाताप के द्वारा अपने हृदय का द्वार नहीं खोला है। उस सामर्थ के प्रगटीकरण में, जो परमेश्वर की महिमा से पृथ्वी को आलोकित करती है, वे केवल कुछ ऐसा ही देखेंगे जिसे अपनी अंधता में वे खतरनाक समझेंगे, ऐसी कोई बात जो उनके भय को भड़काएगी, और वे उसका प्रतिरोध करने के लिए अपने आप को दृढ़ करेंगे। क्योंकि प्रभु उनकी अपेक्षाओं और आदर्श के अनुसार कार्य नहीं करते, वे उस कार्य का विरोध करेंगे। "क्यों," वे कहते हैं, "जब हम इतने वर्षों से इस कार्य में रहे हैं, तो हमें परमेश्वर के आत्मा को क्यों न पहचानना चाहिए?" क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के संदेशों की चेतावनियों और विनतियों का उत्तर नहीं दिया, परन्तु लगातार कहते रहे, "मैं धनी हूँ, और वस्तुओं से समृद्ध हूँ, और मुझे किसी बात की आवश्यकता नहीं।"” Maranatha, 219

बहुतों ने बहुत हद तक प्रारंभिक वर्षा को ग्रहण करने में असफलता पाई है। उन्होंने वे सब आशीषें नहीं पाईं जो परमेश्वर ने इस प्रकार उनके लिए प्रदान की हैं। वे अपेक्षा करते हैं कि जो कमी है वह अन्तिम वर्षा से पूरी हो जाएगी। जब अनुग्रह की सबसे प्रचुरता प्रदान की जाएगी, तब वे उसे ग्रहण करने के लिए अपने हृदय खोलने का इरादा रखते हैं। वे एक भयानक भूल कर रहे हैं। मनुष्य के हृदय में अपनी ज्योति और ज्ञान देकर परमेश्वर ने जो कार्य आरंभ किया है, वह निरंतर आगे बढ़ता रहना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकता का बोध होना चाहिए। आत्मा के निवास के लिए हृदय को हर प्रकार की अशुद्धि से खाली कर शुद्ध किया जाना चाहिए। पाप के अंगीकार और त्याग, लगन भरी प्रार्थना, और स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पण के द्वारा ही प्रारंभिक चेलों ने पेन्टेकॉस्ट के दिन पवित्र आत्मा के उंडेले जाने के लिए तैयारी की थी। वही कार्य, बस अधिक बड़े पैमाने पर, अब किया जाना चाहिए। तब मनुष्य को केवल आशीष माँगनी थी और उसके विषय में प्रभु द्वारा उस कार्य को सिद्ध करने की प्रतीक्षा करनी थी। कार्य परमेश्वर ने ही आरंभ किया है, और वही अपने कार्य को पूरा करेगा, यीशु

मसीह में मनुष्य को सिद्ध बनाकर। पर प्रारंभिक वर्षा से अभिव्यक्त अनुग्रह की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए। केवल वे ही जो उन्हें मिली हुई ज्योति के अनुसार जीते हैं, अधिक ज्योति प्राप्त करेंगे। यदि हम सक्रिय मसीही सद्गुणों के व्यावहारिक प्रदर्शन में प्रतिदिन प्रगति नहीं कर रहे, तो हम अन्तिम वर्षा में पवित्र आत्मा के प्रकट होने को पहचान नहीं पाएँगे। वह हमारे चारों ओर के हृदयों पर बरस रही होगी, पर हम न तो उसे पहचानेंगे और न ही ग्रहण करेंगे। सेवकों के लिए गवाहियाँ, 506, 507.

उस अनुच्छेद में वह यह बताती है कि एक समय ऐसा होगा जब "कृपा की सर्वाधिक प्रचुरता प्रदान की जाएगी", और इस प्रकार वह उस समय की पहचान करती है जब अंतिम वर्षा अपरिमित रूप से उंडेली जाएगी। उस तथ्य के संदर्भ में, वह यह बताती है कि केवल वे ही अधिक प्रकाश पाएँगे जो अपने पास जो प्रकाश है उसके अनुरूप जीवन जी रहे हैं। उस सिद्धांत के अनुसार, यह स्पष्ट है कि प्रकाश (जो कि वर्तमान सत्य है) क्रमशः बढ़ता जाता है। अंतिम वाक्य में वह उस समय की पहचान करती है जब अंतिम वर्षा बरस रही होती है, और कुछ लोग उसे पहचान रहे हैं और ग्रहण कर रहे हैं, और कुछ नहीं। यदि आप उस संदेश को, जो कि अंतिम वर्षा है, पहचानते नहीं हैं, तो आप उसे प्राप्त नहीं करेंगे।

हमें अंतिम वर्षा की प्रतीक्षा नहीं करनी चाहिए। यह उन सब पर आने वाली है जो हम पर गिरने वाली अनुग्रह की ओस और फुहारों को पहचानेंगे और अपनाएँगे। जब हम प्रकाश की झलकियाँ समेट लेते हैं, जब हम परमेश्वर की निश्चित दयाओं की कद्र करते हैं, जो यह चाहता है कि हम उस पर भरोसा करें, तब हर प्रतिज्ञा पूरी होगी। [यशायाह 61:11 उद्धृत.] सम्पूर्ण पृथ्वी परमेश्वर की महिमा से भर दी जाएगी। दि सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट बाइबल कमेंटरी, खंड 7, 984.

जब क्रोधित राष्ट्र नियंत्रण में रखे जाते हैं, तब अन्तिम वर्षा 'मापी' जाने लगती है। जब "अनुग्रह की सर्वाधिक प्रचुरता प्रदान की जाएगी", वही समय है जब अन्तिम वर्षा बिना माप के उंडेली जाएगी।

जब राष्ट्र क्रोधित होते हैं, फिर भी रोके हुए रहते हैं, तब अंतिम वर्षा गिरने लगती है, पर वह "मापी-तौली" होती है क्योंकि उस समय कलीसिया गेहूँ और खरपतवार से मिली-जुली होती है। वही वर्षा है जो गेहूँ और खरपतवार दोनों को परिपक्वता तक पहुँचाती है, और अंतिम वर्षा वर्तमान सत्य का वह संदेश है जिसे या तो पहचाना और ग्रहण किया जाता है, या नहीं। ये सभी भविष्यसूचक अवधारणाएँ पवित्रशास्त्र में स्पष्ट रूप से दर्शाई गई हैं। 11 सितंबर, 2001 को अंतिम वर्षा "फुहारें" पड़ने लगी, और वह क्रमशः बढ़ती जाती है जब तक कि "आधी रात की पुकार" का संदेश नहीं आता और बुद्धिमान तथा मूर्ख कुँवारियाँ सदा के लिए अलग नहीं कर दी जातीं।

तब बुद्धिमानों को परमेश्वर की अन्य भेड़ों को बाबुल से बाहर बुलाने के लिए ध्वजस्वरूप ऊँचा उठाया जाता है, और तब अन्तिम वर्षा अपरिमित रीति से उँडेली जाती है, और वह तब तक बरसती रहती है जब तक मीकाएल उठ खड़ा न हो जाए और मानव अनुग्रहकाल समाप्त न हो जाए।

"मैंने देखा कि चार स्वर्गदूत चारों पवनों को तब तक रोके रखेंगे जब तक पवित्रस्थान में यीशु का कार्य पूरा न हो जाए, और तब सात अंतिम विपत्तियाँ आएँगी।" Early Writings, 36.

चार पवनों को थामे रखना, उन बढ़ते हुए न्यायों पर परमेश्वर के प्रबन्धकारी नियंत्रण का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें वह अंतिम दिनों में होने देता है। एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाई जाने के समय चार स्वर्गदूत चार पवनों को थामे रहते हैं, पर उस अवधि में 'निराशा, युद्ध और रक्तपात की आत्मा' रहती है, और वह आत्मा बढ़ेगी। जब परमेश्वर के बच्चों में से अंतिम जन पर भी मुहर लग जाएगी, तब मीकाएल खड़ा होगा और चारों पवनों पूरी तरह छोड़ दी जाएँगी, और सात अंतिम विपत्तियाँ आ जाएँगी।

प्रकाशितवाक्य अध्याय ग्यारह की "महान भूकंप की घड़ी", दानियेल अध्याय नौ के "कठिन समय", जब सड़क और परकोटा पूरे किए जाएंगे, वही समय है जब "जातियाँ क्रोधित होंगी"। उस समयावधि में अंतिम वर्षा "माप" में उंडेली जाएगी। यशायाह उस समय की पहचान करता है जब अंतिम वर्षा मापी जाती है, और वह उस समय को "पूर्वी पवन

का दिन" के रूप में चिह्नित करता है। वह "पूर्वी पवन का दिन" 11 सितंबर, 2001 था।

अगले लेख में हम "अंतिम वर्षा" के "मापन" पर विचार करना जारी रखेंगे, पर यह स्मरण रखना चाहिए कि मिलर के स्वप्न का वह रत्न, जिसे हबक्कूक की पवित्र पट्टिकाओं पर इस्लाम की तीन हाय के रूप में प्रस्तुत किया गया है, अंतिम दिनों में उस समय की तुलना में दस गुना अधिक चमकेगा, जब इसे मिलर ने पहली बार एकत्र किया था।

एक अवसर पर, जब मैं न्यूयॉर्क शहर में था, रात्रि के समय मुझे आकाश की ओर मंज़िल पर मंज़िल उठती इमारतें देखने के लिए बुलाया गया। इन इमारतों के अग्निरोधी होने की गारंटी दी गई थी, और उन्हें उनके मालिकों और निर्माताओं की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए खड़ा किया गया था। ये इमारतें ऊँची और उससे भी ऊँची उठती गईं, और उनमें सबसे महँगी सामग्री का उपयोग किया गया। जिनके ये भवन थे, वे अपने आप से यह नहीं पूछ रहे थे: 'हम परमेश्वर की महिमा सर्वोत्तम रूप से कैसे करें?' प्रभु उनके विचारों में नहीं था।

"मैंने सोचा: 'हाय, काश जो लोग इस प्रकार अपने साधनों का निवेश कर रहे हैं, वे अपने मार्ग को कैसे देख पाते जैसे परमेश्वर उसे देखते हैं! वे भव्य इमारतें खड़ी कर रहे हैं, पर ब्रह्मांड के शासक की दृष्टि में उनके मनसूबे और योजनाएँ कितनी मूर्खतापूर्ण हैं। वे हृदय और मन की सारी शक्तियों से यह नहीं विचार कर रहे कि वे परमेश्वर की महिमा कैसे कर सकते हैं। वे इस बात को, जो मनुष्य का प्रथम कर्तव्य है, भुला चुके हैं।'"

जब ये ऊँची-ऊँची इमारतें खड़ी हो रही थीं, तो मालिक महत्वाकांक्षी गर्व के साथ इस बात पर आनंदित थे कि उनके पास इतना धन है कि उसे अपने स्वार्थ की तृप्ति में और अपने पड़ोसियों में ईर्ष्या भड़काने में खर्च कर सकें। जिस धन को उन्होंने इस प्रकार लगा दिया, उसका बहुत-सा भाग ज़बरदस्ती की वसूली से, गरीबों को पिसाकर प्राप्त किया गया था। वे यह भूल गए कि स्वर्ग में हर व्यापारिक लेन-देन का लेखा रखा जाता है; हर अन्यायी सौदा, हर धोखाधड़ी वहाँ दर्ज होती है। समय आ रहा है जब अपने छल और उदंडता में मनुष्य ऐसी सीमा तक पहुँचेंगे जिसे प्रभु उन्हें पार करने नहीं देंगे, और वे जानेंगे कि यहोवा की सहनशीलता की भी एक सीमा है।

मेरे सामने जो अगला दृश्य आया, वह आग लगने की चेतावनी का था। लोगों ने ऊँची और कथित रूप से अग्निरोधक इमारतों को देखा और कहा: 'ये पूरी तरह सुरक्षित हैं।' लेकिन ये इमारतें ऐसे भस्म हो गईं मानो वे डामर से बनी हों। दमकल इंजन विनाश को रोकने के लिए कुछ न कर सके। दमकलकर्मी इंजनों को संचालित करने में असमर्थ थे।

"मुझे यह निर्देश दिया गया है कि जब प्रभु का समय आएगा, यदि घमंडी, महत्वाकांक्षी मनुष्यों के हृदयों में कोई परिवर्तन न आया हो, तो लोग यह पाएँगे कि जो हाथ बचाने में शक्तिशाली था, वही नाश करने में भी शक्तिशाली होगा। ईश्वर के हाथ को कोई सांसारिक शक्ति रोक नहीं सकती। भवनों के निर्माण में ऐसी कोई सामग्री नहीं लगाई जा सकती जो उन्हें विनाश से बचा सके, जब ईश्वर का नियत समय आएगा कि वह अपने नियम की अवहेलना और स्वार्थी महत्वाकांक्षा के कारण मनुष्यों को दंड दे।" Testimonies, volume 9, 12, 13.